

बच्चो! तुमने अपनी दादी-नानी से बहुत सी कहानियाँ सुनी होंगी, पर आज हम तुम्हें ऐसी कहानी सुना रहे हैं जो बिल्कुल तुम्हारे आस पास की ही है। कहानी कुछ यों है-



हिमाचल प्रदेश में आसमान से बातें करते ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की तलहटी में बसा एक सुंदर गाँव। चारों ओर से देवदार के वृक्षों से घिरा हुआ। गाँव के चारों ओर हरे भरे सुंदर- सुंदर खेत और सेब के मनमोहक बागीचे। गाँव के चरणों में कल-कल करती नदी का संगीत मानों कानों में रस घोल रहा हो।

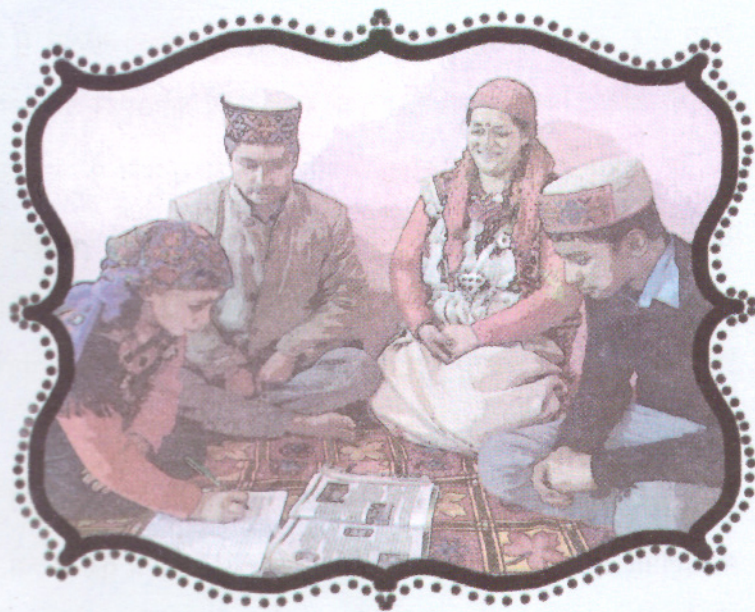


गाँव में लकड़ी और पत्थर से बने नए पुराने मकान हैं। इन्हीं में से एक मकान बिरजू के परिवार का भी है। परिवार में बिरजू के अलावा उसकी पत्नी राधा और दो बच्चे रहते हैं-मीना और राजू। मीना गाँव के सरकारी स्कूल में कक्षा चार में पढ़ती है और राजू सातवीं में। दोनों पढ़ने में होशियार। राजू-मीना के माता-पिता ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं, लेकिन उनका एक ही सपना है कि उनके दोनों बच्चे खूब पढ़ें, आगे बढ़ें।

हर शाम जब भी बिरजू काम पर से थकाहारा घर लौटता तो मीना माँ के दुपट्टे की साड़ी पहनकर उसे अध्यापिका की तरह खूब फटकार लगाती। ऐसे में बिरजू की **खुशी का ठिकाना नहीं रहता**। तब नन्ही अध्यापिका के साथ बच्चा बनकर खेलना उसे बहुत अच्छा लगता और उसकी सारी थकान पल भर में दूर हो जाती। कभी-कभार अपने स्कूल के काम से निपट कर राजू भी उनकी मंडली में शामिल हो जाता। उसके बाद वे चारों एक साथ खाना खाने बैठते। राजू बड़ा था, इसलिए पढ़ने-लिखने के साथ-साथ रसोईघर में कभी-कभार माँ की सहायता कर लेता।

बिरजू बहुत

ही मिलनसार और ईमानदार स्वभाव का व्यक्ति था। वह परिवार के पालन-पोषण के लिए खूब मेहनत करता। बाप-दादा से मिली संपत्ति में बिरजू के हिस्से में दो ही खेत आए थे। सुबह-शाम खेतों में काम करने के साथ-साथ वह गाँव के साथ लगते शहर की एक बड़ी किराना दुकान पर काम करता था। राधा दिनभर खेतों और पशुओं के



काम में उलझी रहती और सुबह-शाम गृहस्थी के कामों में। राधा अपने परिवार को देख कर कई बार सोचती कि उसका परिवार गाँव में सबसे सुखी परिवार है। भगवान करे, इसे किसीकी नज़र न लगे।

बिरजू को बस एक ही बुरी आदत थी कि वह बीड़ी-सिगरेट तो घरवालों से छिपकर पीता ही था, इसी बीच उसे अपने दोस्तों के साथ मदिरापान करने की आदत भी पड़ गई। पहले तो वह शौकिया तौर पर दोस्तों के साथ मदिरापान करता रहा, पर धीरे-धीरे उसका यह शौक आदत में बदलने लगा।

शुरु-शुरु में इस बात का पता परिवार के किसी सदस्य को नहीं लगा, लेकिन धीरे-धीरे उसकी पत्नी राधा को इसकी भनक लगी तो एक दिन अवसर देख उसने बिरजू को समझाते हुए कहा, 'देखो जी! नशा करना बहुत बुरी आदत है! मैंने तो अस्पताल वाली दीदी से यहाँ तक सुना है कि नशीले पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य और परिवार दोनों के लिए बहुत नुकसान देने वाला होता है। देखते नहीं, हमारे आसपास नशा करने वालों के कितने घर उजड़ गए?' पर उस वक्त बिरजू ने ठीक है... ठीक है... कहते राधा की बात एक कान से सुनी तो दूसरे कान से निकाल दी। राधा कसमसा कर रह गई। बिरजू राधा के बार बार समझाने के बावजूद भी शादी-ब्याह, मेलों आदि के अवसरों पर दोस्तों के साथ मदिरा पी ही लेता।

रविवार के दिन रोज की तरह स्कूल का काम खत्म करने के बाद मीना अपनी गुड़िया गोद में लिए मंजू, स्नेहा, कमला के साथ आँगन में लुकाछिपी खेलने में मस्त। आज शाम को उसका जन्मदिन मनाया जाना है। उसकी माँ ने गाँव के सब बच्चों को अपने घर बुलाया है।

मीना को अपना पिछला जन्मदिन अच्छे से याद है, जब उसके पिता यह गुड़िया लेकर आए थे। उसको खुश देखकर स्नेहा ने पूछा, 'इस बार तो तुम बहुत ही खुश लग रही हो? बताओ तो क्या बात है?' यह सुन मीना ने उछलते हुए कहा, 'पता है, आज मेरे पिता मुझे क्या लाने वाले हैं?' 'क्या?' सबने एक साथ पूछा तो वह बोली, 'यह तो मुझे भी पता नहीं।' यह सुन कर सब एक-साथ हँसने लगीं।

इसी बीच माँ ने आँगन में खेलते बच्चों को आवाज़ लगा कर कमरे में बुलाकर कहा, 'देखो! कमरे की लिपाई तो मैंने सुबह ही कर दी है। अब इसे सजाना तुम बच्चों का काम है।' यह सुनते ही सारे बच्चे खुशी से उछलते-कूदते कमरे को सजाने लगे। कोई गुब्बारे फुलाने लगा तो कोई फूलों की लड़ियाँ लटकाने लगा। गुब्बारा फुलाते-फुलाते एकाएक जब अतुल से गुब्बारा फूटा, तो सभी ने जोर का ठहाका लगाया। यह सब देखकर मीना बहुत प्रसन्न हुई। कुछ ही समय में कमरे को सजाने का काम पूरा हो गया। अपने हाथों से दीवारों पर टंगे रंग-बिरंगे गुब्बारे, फूलों की लड़ियाँ देख कर बच्चे फूले नहीं समा रहे थे।

शाम होने तक मीना के सभी दोस्त उसके घर आ गए। मीना अपने नए कपड़ों में राजकुमारी से कम नहीं लग रही थी। रसोई में माँ देसी घी के तरह-तरह के पकवान बनाने में व्यस्त थी। पकवानों की महक से सभी बच्चों के मुँह में पानी आ रहा था। उधर मीना को इंतज़ार था तो बस अपने पिता का।

लंबे इंतज़ार के बाद भी जब मीना के पिता नहीं आए तो उसकी जिद्द पर माँ ने बिरजू को फोन लगाया, 'अजी, सुनते हो? कहां हो? इतनी देर क्यों हो गई? हम सभी कबसे तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं।' दूसरी ओर से बिरजू ने बदले हुए से स्वर में कहा, 'बस, आ ही रहा हूँ।' यह सुनते ही मीना खुशी के मारे उछल पड़ी। पता नहीं, पिता उसके लिए अबकी बार क्या उपहार ला रहे होंगे?

..... तभी दरवाज़ा खुला। मीना ने दौड़ कर पिता के गले लगना चाहा, पर यह क्या!!! उसके पिता नशे की हालत में लड़खड़ाते हुए? बिरजू संभलने की जितनी कोशिश करता, उतना ही गिरने लगता।

....आखिर वह फर्श पर धड़ाम से गिर ही गया। मीना के उपहार का डिब्बा फिसल कर एक कोने में जा छिटका। राधा ने गुस्से में आकर बच्चों के सामने ही बिरजू को डाँटते हुए कहा, 'आज फिर तुम पी कर आए हो? बेटी के जन्मदिन पर भी? घर से तो क्या, अब तुम्हें बच्चों की खुशी से भी कोई लेना देना नहीं?'



राधा ने गुस्से में उसे दो-चार और जली-कटी सुनाई तो नशे में चूर बिरजू उल्टा उस पर ही भड़क उठा, 'किसीके पैसे से नहीं पी है। अपनी कमाई है, अपनी कमाई.....' यह दृश्य देख बच्चे ठिठक कर रह गए। मारे डर के वे कोने में जाकर दुबक गए और मीना रोने लगी।

माँ और राजू की भी आँखें भर आईं। देखते ही देखते बच्चे दबे पाँव अपने घरों को वापिस लौट गए। जन्मदिन के लिए सजे कमरे में अचानक सन्नाटा छा गया।

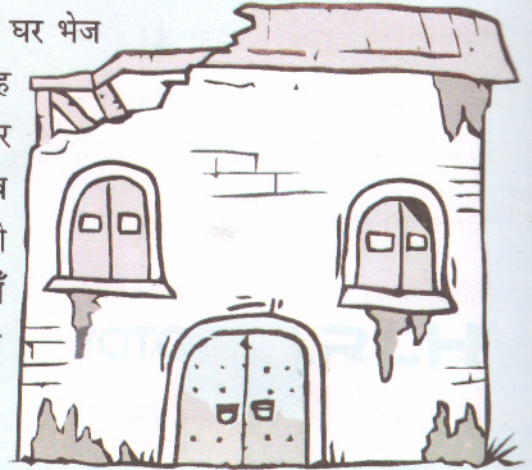
एकाएक बिरजू की तबीयत बिगड़ने लगी। कुछ समय उल्टियाँ करने के बाद वह बेहोश हो गया। राधा और बच्चे परेशानी में इधर-उधर दौड़ने लगे। आखिरकार बिरजू को गाँव वालों की सहायता से अस्पताल ले जाना पड़ा।

अस्पताल में डॉक्टर ने बिरजू की जाँच की और उसे कुछ इंजेक्शन लगाए। आधी रात के बाद बिरजू को होश आया। बच्चे पिता के ठीक होने के इन्तज़ार में अस्पताल में भूखे-प्यासे बेंच पर बैठे रहे और थक-हार कर वहीं सो गए। राधा कभी दवाई लेने दौड़ती, तो कभी इंजेक्शन लाने।

जब बच्चों की आँखें खुली तो उन्होंने डॉक्टर साहब को माँ से कुछ बातें करते देखा। यह देख मीना और राजू भी माँ के करीब आ गए। डॉक्टर उनकी माँ से कह रहा था, 'देखो, रोगी की हालत बहुत खराब है। शराब के अत्यधिक सेवन से इसका लीवर खराब हो चुका है। धूम्रपान और तंबाकू ने फफेड़ों को कमजोर कर दिया है। अगर यही हाल रहा तो मरीज़ का बच पाना मुश्किल हो जाएगा।' यह सुनकर राधा के रोंगटे खड़े हो गए। दुःख एवं निराशा में उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।



पंद्रह दिन तक अस्पताल में रहने के बाद बिरजू को घर भेज दिया गया। राधा सारा दिन उसकी देखभाल करती और वह सारा दिन बिस्तर पर लेटा रहता। दिन बीतने के साथ-साथ घर का खर्च चलाना मुश्किल होने लगा। घर का मुखिया ही जब नशे के कारण बीमार और लाचार हो गया तो पत्नी राधा को मनरेगा में मजदूरी करने को विवश होना पड़ा। एक ओर जहाँ उसे घर का खर्च चलाना था, वहीं दूसरी ओर बिरजू की दवाइयों का खर्च भी पूरा करना था।



कुछ दिन बीते....

बिरजू के स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार हुआ, लेकिन नशे की बुरी आदत के कारण वह परिवार से चोरी-छिपे फिर से नशा करने लगा। इससे उसकी सेहत फिर से बिगड़ने लगी।



मनरेगा में काम करने के बावजूद भी राधा को घर का खर्चा पूरा करने में दिक्कत होने लगी। बिरजू की बीमारी के चलते खेत-खलिहान के काम ठप्प हो गए। उनके लिए दो वक्त की रोटी जुटाना तक मुश्किल हो गया। बिस्तर पर पड़े बिरजू के इलाज के लिए खेत गिरवी हो गए, दो-चार बच्चे गहने भी बेचने पड़े। अब बेचने को कुछ रहा तो बस मकान।

परिवार की आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ने के चलते बच्चों की पढ़ाई पर बुरा असर पड़ने लगा। पढ़ाई के साथ साथ बहुत सी जिम्मेदारियाँ मीना और राजू के कंधों पर आ पड़ी। देखते ही देखते दोनों का बचपन घर के कामों के तले दबने लगा। लंबे इलाज के बाद भी बिरजू के स्वास्थ्य में कोई खास सुधार नहीं हो पाया। बिरजू को भी अब अहसास होने लगा था कि परिवार की जो दशा आज है, उसका जिम्मेदार वह खुद ही है। उसको अब अपने किए पर पछतावा होने लगा। उसे बार बार यह बात सालती कि यदि समय रहते राधा की बात मानी होती, समय रहते जाग गया होता तो आज उसे और उसके परिवार को ये दिन न देखने पड़ते। पर अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

राजू ने पिता की यह दशा देखकर संकल्प लिया कि वह खुद तो इस ज़हर से जीवन भर दूर रहेगा ही, पर अपने दोस्तों को भी नशों से दूर रहने को कहेगा।



माँ प्यारी, सबसे न्यारी-

हमारी संस्कृति में माँ को भगवान का रूप माना गया है। कहानी से हटकर माँ की कोई पाँच ऐसी विशेषताएँ लिखो जो उसे सबसे अलग करती हों-

.....

.....

.....



प्यारे पिता-

कहानी को पढ़कर तुम्हें मीना-राजू के पिता की बहुत सी बातें अच्छी भी लगी होंगी। उनमें से कोई तीन बातें यहाँ लिखो-

.....

.....



जिम्मेदारी किसकी -

समाज को नशा मुक्त करने की जिम्मेदारी किसकी है?

1. मातापिता की
2. बच्चों की
3. सरकार की
4. हम सबकी

अपने आप से-

राधा के परिवार की कहानी पढ़कर तुम्हारे मन में कई सवाल उठ रहे होंगे। इन सवालों को अपने मित्र से साझा करते हुए उसे चिट्ठी लिखो -

.....	
.....	
.....	
.....	
.....	
.....	
.....	
.....	
.....	
.....	
पिन PIN	



भाषा लिखने से पहले किन किन भाषाई कौशलों का विकास होना जरूरी है। क्रम बताओ-

- क. सुनी हुई बात को सही उच्चारण के साथ बोलना।
- ख. शुद्ध वर्तनी के साथ लिखना।
- ग. गंभीरता से किसी बात को सुनना।
- घ. उचित प्रवाह के साथ पढ़ना।



जन्मदिन के मौके पर मीना उदास क्यों हो गई थी? सही विकल्प चुनें-

- क. उसके दोस्त उसके लिए उपहार लेकर नहीं आए।
- ख. उसकी माँ ने उसे डाँटा।
- ग. उसके पिता नशे की हालत में घर आए।
- घ. उसकी सहेलियाँ उससे रूठी हुई थी।



बिरजू के परिवार की दुर्दशा का क्या कारण है-

- क. आमदनी कम होना।
- ख. उनके घर चोरी हो जाना।
- ग. घर में काम न करना।
- घ. बिरजू को नशे की लत लग जाना।



हमारे मित्र कैसे होने चाहिए-

- क. नशा करने वाले।
- ख. झूठ बोलने वाले।
- ग. बुरी आदतों से दूर रहने वाले।
- घ. स्कूल से भागने वाले।



यही सच है-

- क. नशे के सेवन से हँसते खेलते परिवार की दुर्दशा हो जाती है।
- ख. समय से पहले शरीर जर्जर हो जाता है।
- ग. समाज हमसे दूर रहने लगता है।
- घ. हम स्वयं ही अपने दुश्मन हो जाते हैं, क्योंकि नशा सर्वनाश करता है।

चलो कहानी में मुहावरे चुनते हैं-

कहानी में आए मुहावरे छाँट कर नीचे लिखो और उनका अपने शब्दों में प्रयोग करो-

1.
2.
3.
4.
5.
6.

कहानी अभी बाकी है मेरे दोस्त-

बच्चो! कुछ कहानियाँ खत्म होने के बाद भी चलती रहती हैं। इससे आगे की कहानी क्या हो सकती है, सौ शब्दों में लिखो-

.....

.....

.....

.....

.....